अनुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय 1-30

दिनकर : जीवनी, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व

जीवनी : (जन्म एवं बाल्यकाल, पारिवारिक जीवन, विद्यार्थी जीवन, विवाह, संतान, साहित्य की प्रेरणा, आजीविका)

व्यक्तित्त्व : (जनता के प्रतिनिधि, स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, व्यक्तित्त्व निर्माण के आदर्श महापुरूष एवं साहित्यकार, साहित्यिक प्रभाव, साहित्यिक चेतना का विकास, राष्ट्रीय रचनाएँ, नए स्वर, मृत्यु, श्रद्धांजलियाँ।)

कृतित्त्व : दिनकरजी के मुक्तक काव्य

(रेणुका, हुँकार, रसवंति, द्वंद्वगीत, सामधेनी, बापू, इतिहास के आँसू, धुप और धुआँ, नीम के पत्ते, दिल्ली, नीलकुसुम, नए सुभाषित, परशुराम की प्रतीक्षा, मृत्तितिलक, कोयला और कवित्त, चक्रवाल।)

अनुदित : (सीपी और शंख, आत्मा की आँखें, हारे को हरीनाम।)

प्रबंध-काव्य : (कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी, प्रणभंग, उर्वशी)

बालोपयोगी काव्य :

सम्मान :

द्वितीय अध्याय 31-64

" कुरूक्षेत्र के प्रेरणास्रोत "

अ) कुरूक्षेत्र के विचारस्रोत

(रसेल का प्रभाव — तिलक का प्रभाव — भारतीय संस्कृति का प्रभाव — व्यक्तिवादी विचारधारा का प्रभाव — स्माजवादी विचारधारा का प्रभाव।)

ब) कथास्रोत का प्रभाव

तृतीय अध्याय

65-90

" कुरूक्षेत्र में पात्र-परिकल्पना "

अ) कुरूक्षेत्र के प्रमुख-पात्र।

1) **भीष्म** – (युद्ध के समर्थक – स्पष्टवक्ता, शांति और साम्य के वाहक – भविष्य के प्रति आस्थावान – अपारशक्ति – मनुष्य की शक्ति का विश्वास – पश्चाताप – अंर्तद्वंद्व – कोमल भावों का हनन – कर्मयोगी – महानता)

2) **युधिष्ठिर** (युद्धग्रस्त मानव के रूप में – विचारशील व्यक्ति – निर्लोभी – पश्चाताप – अंर्तद्वंद्व – विश्वशांति और प्रेम का पुजारी – आत्मविश्वास)

ब) कुरूक्षेत्र के गौण-पात्र।

(दु:शासन – अश्वत्थामा – धृतराष्ट और गांधारी – अभिमन्यु – उत्तरा – भीम – पार्थ अर्जुन – कृष्ण – राम – जरासंध – राधेय कर्ण – द्रुपद – शकुनि – शिशुपाल – व्यास – अश्वत्थामा – कृतवर्मा और कृपाचार्य – शेष कौरव-पांड़व)

चतुर्थ अध्याय

91-132

" कुरूक्षेत्र का शिल्प विधान "

कुरूक्षेत्र का मूल स्रोत – मूलकथा में परीवर्तन एवं नवीन उद्‌भवनाएँ – नवीन दृष्टि

मानव-प्रेम

1) युद्धजन्य हिंसा से उत्पन्न मानव-प्रेम।

2) मानव के उज्वल भविष्य की कामना प्रेरित बंधुत्व-भाव।

3) दलितों के प्रति करूणा से उत्पन्न क्रांतिमूलक मानव-प्रेम।

4) युद्ध के व्यापक कारणों के अनुसंधान के मूल में निहित मानव-प्रेम

आत्मग्लानि से प्रेरित बंधुत्ववादी चेतना।

कुरूक्षेत्र में रस-योजना। मानवता वाद

कुरूक्षेत्र में प्रकृति चित्रण

कुरूक्षेत्र का कलापक्ष (कुरूक्षेत्र की भाषा – गुण – प्रतीक योजना – मानवीकरण – संवाद योजना)

कुरूक्षेत्र में अलंकार

कुरूक्षेत्र में छंदयोजना।

कुरूक्षेत्र की शैली।

पंचम अध्याय

" कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना " 133 - 163

राष्ट्रीय चेतना - (समस्या और समाधान - युद्धजन्य निर्वेद - युद्ध की अनिवार्यता - मृत्युंजयी भीष्म - बोलता शौर्य - एक ही तुलापर - द्वापर के द्वारतक - विचारों का प्रेरणास्रोत - शांति के आधार - समन्वय की ओर - मानवतावादी चिंतन - आंतर्राष्ट्रीयता - क्रांति की चेतना)

सांस्कृतिक चेतना - (संस्कृति का विकास - आश्रम व्यवस्था और ऋषि - धार्मिक अनुष्ठान - कवि के युद्ध संबंधी दृष्टिकोण - करूणा और सहिष्णुता - सत्‌चित् आनंद - भारतीय संस्कृति का प्रभाव)

षष्ठ अध्याय

" कुरुक्षेत्र का संदेश " 164 - 187

(मानव जीवन में आशा - श्रम का महत्त्व - नवीन विश्वनिर्मिती - मनुष्यत्त्व का पुर्नजीवन - पलायनवादी प्रवृत्ति का विरोध - अन्याय का दमन - वर्तमान समस्याओं का साम्यवादी समाधान - दिनकर का युद्धदर्शन - प्रतिशोध की भावना - विज्ञान एक वरदान - सत्ता समानता - हिंसात्मक प्रवृत्ति का संदेश - विद्रोह की व्यापकता - राजतंत्र की निंदा - निःस्वार्थ कार्य का संदेश - भाग्यवाद के विरोधी - आशावादी बनने का संदेश - कर्म की महत्ता - लोकसंग्रह की भावना - आसक्ति और विरक्ति का समन्वय - विरोधी गुणों का समन्वय - हृदय और बुद्धि का समन्वय - शौर्य और करूणा का दर्शन - ज्ञान और भावना का समन्वय)

सप्तम अध्याय

" उपसंहार " 188 - 199

संदर्भ-ग्रंथ सूची